नईदुनिया
सोमवार 25 सितंबर 2006

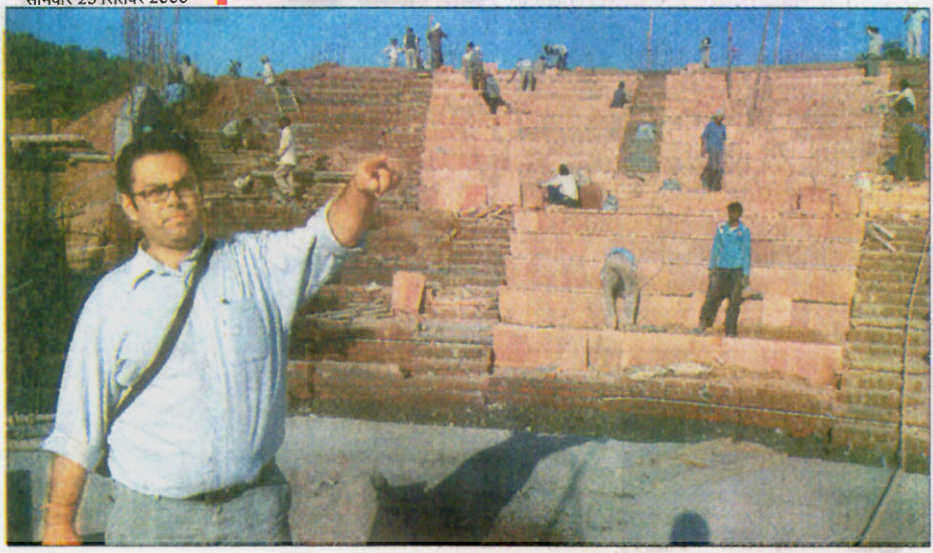

आईटीएम यूनिवर्स में बन रहे एमफी थिएटर का एक दृश्य।

एमफी थियेटर में आप होंगे कुछ खास

ग्वालियर। जब आप आईटीएम यूनिवर्स में बन रहे एमफी थिएटर में बैठेंगे तो आपको यह अहसास होगा कि आप कुछ खास हैं। ये थिएटर ग्वालियर के लिए अनोखा होगा। इसका निर्माण 10 अक्टूबर तक पूरा हो जाएगा।

ग्वालियर में अनोखा होगा आईटीएम यूनिवर्स में बन रहा ओपन थिएटर

एमफी थिएटर की प्रत्येक चीज खास होगी। इसका साउंड सिस्टम विश्व बेहतरीन कंपनियों में शुमार बॉस कंपनी का होगा। यह सिस्टम कुछ अलग ही अंदाज में लगाया जाएगा। इसकी विशेषता यह होगी, जितनी आवाज मंच के पास सुनाई देगी, उतनी ही थिएटर के किसी भी कोने में सुनाई देगी। इसमें लाइट भी कुछ अलग तरीके से ही फिट की जाएगी। इसमें इस चीज का ध्यान रखा गया है कि लाइट किसी के आँख पर न पड़े। थिएटर की लाइटिंग मोमबत्ती अथवा दीपक के उजाले का अहसास दिलाएगी। डेढ़ एकड़ के दायरे में बनने वाला इस थिएटर में लगभग ढाई करोड़ की लागत आएगी। इसकी दर्शक क्षमता ढाई से तीन हजार लोगों के बीच होगी। इसको अनोखा रूप देने में दिल्ली के आर्किटेक्ट मनीष गुलाटी की बहुत बड़ी भूमिका रही है। -नसं

प्राकृतिक वातावरण भी मिलेगा

आधुनिक सुविधाओं के बीच प्राकृतिक वातावरण भी एमफी थिएटर में मिलेगा। सीढ़ीनुमा बनाई गई दर्शक दीर्घा में प्रत्येक सीढ़ी के नीचे घास लगाई जाएगी। इसका उद्देश्य कार्यक्रम को देखते समय पैर ठंडी घास पर रहें। इसमें वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम भी लगाया गया है, जिससे इस डेढ़ एकड़ दायरे का पानी जमीन में जा सके। थिएटर के चारों ओर 10 फुट ऊँची झरोखेदार दीवार बनाई जाएगी, जिससे हवा आर-पार हो सके। इस दीवार की साज-सज्जा ग्वालियर की ऐतिहासिकता को ध्यान में रखकर की जाएगी।

मेरी यात्राओं का निचोड़ है

इस थिएटर को मूर्तरूप देने में अहम् भूमिका निभाने वाले आर्किटेक्ट मनीष गुलाटी ने बताया कि इसमें इटली, ग्रीस और ग्वालियर की यात्राओं का निचोड़ है। उन्होंने बताया कि वे ग्वालियर की ऐतिहासिक इमारतों से काफी प्रभावित हैं, उसका समायोजन इस थिएटर में करने की कोशिश की है। मनीष का ग्वालियर से पुराना नाता है। उन्होंने जूनियर तक की शिक्षा कॉर्मल कान्वेंट से प्राप्त की है।

"मेरे लिए यह बहुत ही चुनौती भरा काम था। इस प्रोजेक्टर को केवल 55 दिन में पूरा करना है। मैंने यह काम 16 अगस्त को हाथ में लिया था और 10 अक्टूबर तक इसे साज-सज्जा के साथ पूरा कर देंगे।"

राममोहन त्रिपाठी, कांट्रेक्टर